बी.ए. भाग-3
हिन्दी - प्रतिष्ठा
सप्तम पत्र
'भाषा विज्ञान एवं संस्कृत'

रमेश कुमार यादव
हिन्दी - विभाग
डी. के. कालेज, डुमरॉव
बक्सर



भाषा का स्वरूप —

'भाषा' शब्द का प्रयोग कई अर्थों में होता है। सामान्य रूप से भाषा उन सभी माध्यमों का बोध कराती है जिनसे भावाभिव्यञ्जन का काम लिया जाता है। इस दृष्टि से पशु - पक्षियों की बोली भी भाषा है, इंगित भी भाषा है, सड़क की लाल - हरी बत्ती भी भाषा है और मनुष्य जो बोलता है वह भी भाषा है।

भाषा शब्द का प्रयोग पशुओं या पक्षियों की बोली के लिए भी किया जाता है; जैसे बन्दरों की भाषा, कुत्तों की भाषा, तोता - मैना की भाषा आदि। गोस्वामी तुलसीदास जी ने काक-भुशुंडि और गरुड़ के वार्तालाप के प्रसंग में लिखा है -

समुझै खग खग की भाषा।

यहाँ खग - भाषा अर्थात् पक्षी की भाषा का स्पष्ट उल्लेख है। पशु - पक्षियों की भाषा का अध्ययन करने वालों का कहना है कि उनकी भाषा में भी भाव और अभिप्राय के अनुसार भेद हो जाया करता है। प्रसन्नता के समय उनकी भाषा वही नहीं रहती जो क्रोध या क्रोध के समय। कुत्ते या बिल्ली की बोली ध्यान से सुनने पर हम भी देखते हैं कि अवसर के अनुसार अर्थात् मनोदशा के अनुसार उनकी ध्वनि में अन्तर हुआ करता है।

अपना अभिप्राय व्यक्त करने के लिए आँख, हाथ, सिर आदि का संचालन भी भाषा के अन्तर्गत आता है। इसे आंगिक या इंगित भाषा कहते हैं। आँखों से किसी को चलने का इशारा करना, किसी को बैठने को कहना, किसी को जाने का निर्देश देना, किसी के सामने दीनता, किसी पर क्रोध प्रकट करना, किसी से प्रेम जताना आदि दैनिक व्यापार हैं। बिहारी के नायक-नायिका आँख की भाषा से ही अपने सारे भाव एक-दूसरे पर प्रकट कर देते हैं—

कहत नटत रीझत खिझत मिलत खिलत लजियात।
भरे भौन में करत हैं, नैनन ही सों बात॥

सहमति और असहमति, स्वीकृति और अस्वीकृति व्यक्त करने के लिए सिर हिलाना साधारण बात है। इसी तरह हाथ हिलाकर हम किसी को बुलाते हैं, किसी को दूर हटने को कहते हैं, किसी को कुछ करने से मना करते हैं, किसी से कुछ माँगते हैं, किसी से आरजू-मिन्नत करते हैं, किसी को मारने का इशारा करते हैं। आंगिक या इंगित भाषा का प्रयोग केवल गूँगे ही नहीं करते, वाणी सम्पन्न भी करते हैं। अन्तर यह है कि गूँगों के लिए वह अनिवार्य है और वाणी-सम्पन्न मनुष्यों के लिए वाचिक भाषा की पूरक। किसी को डाँटते समय केवल वाणी के प्रयोग से ही सन्तोष नहीं होता, हम हाथ और आँख के संचालन से भी क्रोध व्यक्त करते हैं। व्याख्यान देते समय

मेज पर हाथ पटककर या जमीन पर पैर पटककर हम अपने वक्तव्य को अधिक सबल रूप में व्यक्त करने का प्रयास करते है।

अर्थबोध के अनुसार मनुष्य कई प्रकार के चिन्ह भी काम में लाता है। स्काउट, नाविक या सैनिक झंडे की सहायता से अपना संदेश एक-दूसरे तक भेजते हैं। झंडे की भाषा का इतना विकास हो चुका है कि दो दूरस्थ पहाड़ों पर खड़े सैनिक या दो दूरस्थ जहाजों पर खड़े नौ-सैनिक परस्पर भली-भाँति बातें कर लेते हैं। गाड़ी अपनी लाल-हरी झंडियों की सहायता से ड्राइवर को गाड़ी रोकने और चलाने का आदेश दूर से ही दे देता है। सड़क की लाल-हरी बत्तियाँ रुकने और जाने का निर्देश करती है। यातायात का नियन्त्रण करने वाले सिपाही का हाथ उठाना इसी कोटि की भाषा है।

भाषा का मुख्य प्रयोग ध्वनि-संकेतों की सहायता से भावों या विचारों की अभिव्यञ्जना के लिए ही होना चाहिए। ध्वनि-संकेत की भाषा ही एकमात्र ऐसी भाषा है जो वक्तव्य को पूर्णता और स्पष्टता से सम्प्रेषित कर सकती है।

रमेश कुमार यादव
असिस्टेंट-प्रोफेसर
हिन्दी-विभाग
डी. के. कालेज, डुमराँव
बक्सर।